Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 6, Issue 3&4 - 2021, Pg. No. 1-3
Peer Reviewed Journal

Research Article

'हिमाचलदर्शनम्' नामक महाकाव्य में वर्णित ऋषि–परम्परा का विवेचन

शुभम दीक्षित

पीएचडी छात्रा, संस्कृत विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत।
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202102

I N F O

E-mail Id:
aryaml.pyp56@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0000-0003-3213-433X

Date of Submission: 2021-07-28
Date of Acceptance: 2021-09-07

सारांश

भारतीय संस्कृति ऋषि–परम्परा से अनुप्राणित है, न केवल वैदिक ग्रन्थों में अपितु अनेक लौकिक संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों में भी ऋषि–पराम्परा के प्रमाण मिलते हैं। ऋषियों के बिना भारतीय संस्कृति के अस्तित्व की परिकल्पना करना असम्भव है।

वर्तमान काल में संस्कृत महाकाव्यों के लेखन की परम्परा अवरुद्ध प्रायः प्रतीत होती है। इस संस्कृत महाकाव्य लेखन परम्परा में सितम्बर 2019 में एक संस्कृत महाकाव्य प्रकाशित हुआ है जो आशुकवि के रूप में विख्यात डॉ. मनोहरलाल आर्य द्वारा विरचित है।[1] इस महाकाव्य में हिमाचल–प्रदेश का समग्र वर्णन 12 सर्गों में काव्यशैली में प्रस्तुत किया गया है। इसमें अनेक स्थलों पर वैदिक ऋषियों का वर्णन उपलब्ध होता है, जिनका विवेचन करना इस शोधलेख का वर्ण्य विषय है।

ऋषि का स्वरूप–

'ऋषि' किसे कहते हैं? उसका क्या स्वरूप है? इस विषय में निम्नलिखित प्रमाण द्रष्टव्य है, जैसे–

- ऋषिर्दर्शनात्।[2]
- साक्षाकृतधर्माण ऋषयो बभूवुः।[3]
- सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे।[4]
- ऋषयो मन्त्रद्रष्टार इत्यादि।
- अर्थात् जो मन्त्रद्रष्टा, वेद–संहिताओं का साक्षात्कार करने वाले, परोपकारी, क्रान्तद्रष्टा व सद्विद्याओं के उपदेष्टा होते हैं, वे ऋषि कहलाते हैं।

हिमाचल–प्रदेश को जहाँ देवभूमि कहा जाता है, वहाँ वह ऋषिभूमि भी है। यद्यपि हिमाचल–प्रदेश पर लिखे गये अनेक इतिहास–ग्रन्थों में विविध ऋषियों के नामों का उल्लेख मिलता है तथापि संस्कृत में लिखा गया 'हिमाचलदर्शनम्' नामक एकमात्र ऐसा महाकाव्य है, जिसमें इसके स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध होते हैं। इस महाकाव्य में उल्लिखित ऋषि हिमाचल–प्रदेश में तपस्या करने, निवास करने व विविध तीर्थस्थल व मन्दिर आदि के निर्माण करवाने वाले उल्लिखित हैं। उन्हीं ऋषियों की उपस्थिति के कारण हिमाचल–प्रदेश की संस्कृति ऋषिसंस्कृति के रूप में जानी जाती है। अतः यहाँ ऋषियों से सम्बन्धित उन विशेष सन्दर्भों का उल्लेख करना अत्यन्त प्रासङ्गिक है, जैसे–

तत्रर्षिरास्त च पुरा हि मरीचिनामा
तेजोमरीचिरुत तस्य हिमाचलेषु।
आगत्य वासमकरोदथ तस्य नाम्ना
चम्बेतिनामनगरी भुवने प्रसिद्धा।।[5]

Copyright (c) 2021: Author(s). Advanced Research Publications

प्रस्तुत पद्य में मरीचि नामक ऋषि के चम्बामण्डल में चिरकाल तक निवास करने तथा उनके तेज स्वरूप उस स्थान का नाम 'चम्बा' रखे जाने का वर्णन मिलता है।

इसके अतिरिक्त इसी सर्ग में ब्रह्मनगरी का उल्लेख है, जिसके नाम से 'भरमौर' नामक क्षेत्र के नामकरण का वर्णन मिलता है।[6]

आत्रेयकर्षिसदनं वदतीतिकाली–
धारीतिनामविदितो ववृतेऽत्रबाबा।
ऊनाख्यकं नगरकं समवासयत्स
लोकश्रुतिस्तदपि पोशयतीतिवृत्तम्[7]।।

प्रस्तुत श्लोक में ऋषि आत्रेय के निवास व मन्दिर के होने के संकेत मिलते हैं। ऊनामण्डल नामक तृतीय सर्ग में यहाँ स्पष्टतया उल्लेख मिलता है, कालीधारी नामक सिद्धपुरुष उसी दत्तात्रेय नामक मन्दिर में रहते थे तथा उन्होंने ही हिमाचल–प्रदेश में 'ऊना' नामक मण्डल को बसाया था तथा उस स्थान का नाम 'ऊना' रखा था।[8]

इसी तृतीय सर्ग में–

श्रीध्यूंसराख्यमिह धौम्यर्षिप्रणीतं
सन्मन्दिरं पशुपतेर्निखिलार्चनीयम्।
ऊना च तेन खलु पाण्डवकालिकायाः
संस्मारयत्यविरतं न्वितिहासवृत्तेः।।[9]

यहाँ धौम्य ऋषि के निवास का उल्लेख है, जिसने ऊना नामक स्थान में भगवान् पशुपति के एक भव्य मन्दिर की स्थापना की थी।

हिमाचल दर्शन के विलासपुरमण्डल नामक पञ्चम सर्ग में–

श्रीमन्मृकण्डुसुतसद्म शुभं जुखाला–
भूमावियं क्षितिरहो प्रयता मुनीनाम्।
वैशाखपर्वसुषमात्र मनोभिरामा
तेनापगा विजयते खलु पुष्पभद्रा।।[10]

प्रस्तुत पद्य में मार्कण्डेय ऋषि तथा उसके नाम से बने विलासपुर मण्डल में एक प्राचीन मन्दिर का वर्णन है जो वर्तमान में भी विद्यमान है।

मण्डीमण्डल के वर्णन में–

लोकश्रुतिः प्रचलिता प्रतना तडाग
आसीद्यदत्र नगरे करसोगनाम्नि।
ब्रह्मावलोकननिबद्धमतिस्तटेऽस्य
योगी ततान हि तपो भृगुनामधेयः।।[11]

स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि यहाँ भृगुऋषि तपस्या किया करते थे। उपमण्डल करसोग नामक स्थान में भृगुऋषि के नाम से विख्यात एक तालाब आज भी विद्यमान है, जिससे इसकी प्रामाणिकता स्पष्ट सिद्ध होती है। इस भृगुऋषि ने यहाँ तपस्या करके ब्रह्मदर्शन किया था, ऐसा उल्लेख मिलता है।

इसी षष्ठ सर्ग में–

पाराशरं सुभगमन्दिरमस्यकुक्षौ
सत्काष्ठखण्डरचितं त्रितलं विचित्रम्।
श्रीबाणसेननृपतिप्रवरेण यस्य
पूर्वं व्यधायि रचनेति वदन्ति विज्ञाः।।[12]

पराशर ऋषि के काष्ठनिर्मित तीन–तलीय एक अद्भुत मन्दिर का वर्णन मिलता है, जिसकी रचना तात्कालीन राजा श्री बाणसेन द्वारा की गई थी। यह स्थान पराशर ऋषि की तपः स्थली के रूप में भी जाना जाता है, जिसका स्वरूप आज भी यथावत् विद्यमान है।

इसके अतिरिक्त इस मण्डल में जमदग्नि ऋषि की तपस्या का वर्णन मिलता है, जैसे–

लोकश्रुतिः सुविदितास्ति पुरा महर्षि–
रत्रावनौ हि जमदग्निवरस्तताप।
सस्नौ स पूतसलिले सततं शतद्रो–
रध्यात्मशातसुधयाधिजगाम तोषम्।।[13]
कौपीनमत्र सहजं विहिताभिषेकः
प्रागेकदा मुनिरसौ निरपीपिडद्वै।
अस्तित्वमेतदगमत्सर आशु तेन
लोके हि योगिमहसो महिमा विचित्रः।।[14]

प्रस्तुत सन्दर्भों से स्पष्ट होता है कि इसी मण्डीमण्डल में जमदग्नि ऋषि तपस्या किया करते थे तथा वहां शतद्रु नदी में स्नान किया करते थे। वहाँ पर विद्यमान एक झील का सम्बन्ध भी इस ऋषि के साथ जोड़ा जाता है, इनका अस्तित्व आज भी इस स्थान में यथावत् देखा जा सकता है।

हिमाचलदर्शन नामक महाकाव्य में कुल्लूमण्डल के अन्तर्गत–

श्रीशृंग्यर्षेः प्रयतसदनं यत्र शैलोच्चशृङ्गे
बालीचौकीपदत उदिते चापि गाडागुशैणात्।
हारौ यस्याः पलचननदी वा गुशैणापगा च
बन्जाराख्याऽचलततिरहो भाति सा कुल्लुधाम्नि।।[15]

शृङ्गीऋषि द्वारा यहाँ कूल्लूमण्डल में तपस्या करने का उल्लेख है, जिसका यहाँ पर्वत शिखर पर एक पवित्र मन्दिर आज भी विराजमान है।

हिमाचलदर्षन महाकाव्य के इसी सप्तम सर्ग में–

धौम्य–व्यासौ परशुभृगुकौ गौतमः कश्यपोऽपि
शृङ्गि–स्कन्द–च्यवनमुनयः श्रीभरद्वाजनामा।
सद्ब्रह्मर्षिप्रभृतय इहाकार्षुरेते तपस्यां
कुल्लूस्तस्मादृषिवसुमती प्रोच्यते चाप्तवर्य्यैः।।[16]

धौम्य, व्यास, परशुराम, भृगु, गौतम, कश्यप, शृङ्गी, स्कन्द, च्यवन और भरद्वाज नामक ऋषियों द्वारा तपस्या करने का वर्णन मिलता है, इस आधार पर कुल्लू की संस्कृति ऋषिसंस्कृति से ओत–प्रोत है, इसे ऋषिभूमि के नाम से भी जाना जाता है। इसी के अन्तर्गत प्रीणी नामक स्थान तथा मनाली नामक पर्यटक स्थली में मनुमन्दिर का होना भी इस तथ्य की पुष्टि करता है।

हिमाचलदर्शन महाकाव्य के लाहुलस्पीति नामक अष्टम सर्ग में–

एका लोकश्रुतिरपि तता द्रौपदीश्रीवशिष्ठा–
वन्त्येष्ट्यात्र त्रिदशनगरीं मोक्षकामावकामौ।
प्राग्लेभाते त्विह' तनदही' संज्ञयासौ प्रसिद्ध–
श्चन्द्राभागौ प्रणयनिरतावूषतुः प्रागिहैव।।[17]

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202102

मोक्षाभिलाषी वशिष्ठ मुनि की अन्त्येष्टि का वर्णन मिलता है, उसने लाहुलस्पीति की पवित्र स्थली में अपने भौतिक शरीर का परित्याग किया जो स्थान, आज 'तनदही' के नाम से जाना जाता है। भले ही यह एक किंवदन्ती हो परन्तु इसके मूल में कोई न कोई ऐतिहासिक तथ्य तो सम्भव ही है।

प्रस्तुत महाकाव्य के सिरमौरमण्डल नामक नवम सर्ग में 'जलाल' नदी का वर्णन मिलता है, जिसका सम्बन्ध यमुना नदी के साथ जोड़ा जाता है। इस नदी के समीप मुनि परशुराम का उल्लेख है, जैसे–

पौराणिकी प्रचलिता किल किंवदन्ती
पूर्वं बभूव यमुनेति च नाम तस्याः।
तत्सन्निधौ परशुराममुनिर्जघानाऽऽ–
जौ द्वेषणं सपृतनं हि सहस्रबाहुम्।।[18]

इस श्लोक में जलाल (यमुना) नदी के समीप स्थित स्थान में परशुराम ने क्रूर शत्रु सहस्रबाहु को मारा ता। यहाँ ऋषि परशुराम के शौर्य का वर्णन सिरमौर की धरती को जहाँ शौर्यस्थली होने की पुष्टि करता है, वहाँ उसके ऋषि भूमि की ओर भी स्पष्ट संकेत करता है। सिरमौर की सैणधार की धरती इसकी साक्षिणी रही है, जैसे–

तत्सैणधारधरणौ तुमुलेऽतिरौद्रे
शत्रुव्रजस्य पततः पतितैस्तनूभ्यः।
नद्याञ्च शोणितकणैः क्षतविक्षताभ्यः
शोणीबभूव यमुना तटिनी तदासौ।।
सा लोहिताम्बुबहुलात्र जलालनाम्ना
ख्याता बभूव तटिनी सिरमौरधाम्नि।
ऐतिह्यमेवमिह दैववशात् क्रियाणा–
मस्तित्वमेति घटनाज्जगतीतले हि।।[19]

इसके अतिरिक्त यहाँ[20] जमदग्नि, परशुराम व रेणुका की कथा का वर्णन भी उक्त आशय की पुष्टि करता है।

इसी महाकाव्य के किन्नौरमण्डल नामक बारहवें सर्ग में–

लोकश्रुतिः प्रविततेह नृपो हि विश्वा–
मित्रश्चचार विपिनं सह सैनिकैः प्राक्।
आखेटनाय समबाधत तं पिपासा
वाशिष्ठधाम समविव्रजदम्बु पातुम्।।[21]

राजा विश्वामित्र तथा वशिष्ठ ऋषि की कथा वर्णित है, जिसमें–

आखेटक्रीडा करता हुआ राजा विश्वामित्र सैनिकों के साथ पानी पीने के लिए वहाँ (किन्नौर) स्थित वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में प्रवेश करता है तथा वशिष्ठ ऋषि उसका भव्य आतिथ्य करते हैं। राजा ने ऋषि के आश्रम में अलौकिक गुणों वाली कामधेनु को देखा और ऋषि से उसे प्राप्त करने की याचना की, ऋषि द्वारा राजा की याचना स्वीकार न करने पर राजा उसे बलात् छीनने का प्रयास करने लगा, तब उसे धेनु की अलौकिक शक्ति के फलस्वरूप अनेक दिव्य शस्त्रधारी सैनिक वहाँ अचानक प्रकट हो गए जिनके सहयोग से ऋषि वशिष्ठ ने उन सबको मार डाला।[22]

इसी कथा के अन्तर्गत राजा मलमाष व ऋषिपुत्र 'शक्ति' की मुठभेड़ का वर्णन भी मिलता है, जिसके अन्तर्गत शतद्रु और विपाशा नदियों का भी उल्लेख है।

इस प्रकार हिमाचलदर्शन नामक महाकाव्य में मुख्यरूप से मरीचि, दत्तात्रेय, धौम्य, मार्कण्डेय, भृगु, पराशर, जमदग्नि, श्रृङ्गी, व्यास, परशुराम, गौतम कश्यप, स्कन्द, च्यवन, भरद्वाज व वशिष्ठ नामक 16 ऋषियों का प्रसङ्गवश वर्णन मिलता है।

यद्यपि हिमाचल–प्रदेश के विविध ऐतिहासिक ग्रन्थों में इसके अतिरिक्त अन्य ऋषियों का सम्बन्ध भी हिमाचल की धरती के साथ उल्लिखित है तथापि हिमाचलदर्शन नामक अभिनव संस्कृत महाकाव्य में वर्णित इन ऋषियों के प्रसङ्गों से यह सिद्ध होता है कि हिमाचल–प्रदेश ऋषियों की पावन तपः स्थली रही है, इसकी संस्कृति भी ऋषि–संस्कृति के नाम से जानी जाती है, जिससे इस प्रदेश का गौरव बढ़ता है, अतः इस देवभूमि में ऋषि–संस्कृति का भी गहरा सम्बन्ध है इस तथ्य की पुष्टि हिमाचलदर्शन नामक महाकाव्य द्वारा होती है।

सन्दर्भ सूची

1. हिमाचलदर्शनम् (संस्कृतमहाकाव्यम्) डॉ. मनोहरलाल आर्यः, प्रणवप्रकाशन, काँगडा, हिमाचल–प्रदेश।
1. नि.रू.– 2.11
2. नि.रू.– 1.20
3. नि.रू.– 2.37
4. हि.द.– 2.8
5. हि.द.– 2.9
6. हि.द.– 3.3
7. हि.द– 3.3–5
8. हि.द.– 3.57
9. हि.द.– 5.63
10. हि.द.– 6.48
11. हि.द.– 6.63
12. हि.द– 6.99
13. हि.द.– 6.100
14. हि.द.– 7.90
15. हि.द.– 7.101
16. हि.द.– 8.50
17. हि.द.– 9.51
18. हि.द.– 9.52–53
19. हि.द.– 9.53, 9.64–82 श्लोक।
20. हि.द.– 12.52
21. हि.द.– 12.53 से 55 श्लोक।
22. हि.द.– 12.56–69 श्लोक।

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202102